

उचित आहार का निर्धारण (Setting a proper diet plan)

संदर्भ

पूरे विश्व में तेजी से उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं में से एक होने का तमगा लगने के बावजूद भारत ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2018 के 119 देशों की सूची में 103वें पायदान पर है। इस पायदान पर होना भारत के लिये अत्यंत गंभीरता का विषय है। हाल ही में भारत की राजधानी, दिल्ली में दीर्घकालिक कुपोषण तथा भूख की वजह से आश्चर्यजनक ढंग से तीन बच्चियों की मौत हो गई थी।

क्या यह खिड़बना नहीं है कि ऐसी घटना उस जगह पर हुई जहाँ प्रतिव्यक्ति आय काफी उच्च है। भारत में कुपोषण की भयावह स्थिति वैश्विक पटल पर दयनीय होने के साथ-साथ सभी राज्यों में भी असमान रूप से भिन्न-भिन्न है।

भारत की स्थिति

- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-2016 के मुताबिक, भारत में 5 वर्ष से कम उम्र वाले नाटे कद (उम्र के अनुपात में लंबाई का कम होना) के बच्चों की संख्या (38.4%) का अनुपात भी अंतरराष्ट्रीय स्तर (22.9%) की तुलना में काफी ज्यादा है।
- उम्र के अनुपात में वजन का कम होना भी भारत के लिये एक बड़ी समस्या है। भारत में पाँच वर्ष से कम उम्र की श्रेणी में अनुमानतः 53.3 मिलियन से ज्यादा नाटे कद के, 49.6 मिलियन कम वजन वाले और 29.2 मिलियन कमजोर (लंबाई के अनुपात में कम वजन) बच्चे हैं।

बड़ी चुनौतियाँ

- बढ़ती समृद्धि ने मुश्किल से ही कुपोषण की चरिकालिक समस्या पर कोई सार्थक प्रभाव डाला है। तीव्र आर्थिक संवृद्धि के अनेकों लाभ होते हैं कति ऐसी संवृद्धि किसी तरह भी पर्याप्त और वहनीय नहीं होगी यदि लाखों बच्चे भयानक कुपोषण के शिकार होंगे।
- यह कुपोषण केवल बच्चों के बचपन को प्रभावित करते हुए बीमारियाँ ही नहीं लाता है अपितु दीर्घकालिक तौर पर भी प्रभाव डालता है। जैसे-जैसे बच्चे बड़े होंगे शिक्षा, श्रम और उत्पादकता के साथ-साथ भारत की आर्थिक संवृद्धि भी प्रभावित होगी। लेकिन एक बड़ा सवाल यह है कि समाधान कहाँ है?
- पहली समस्या, आर्थिक संवृद्धि पर आधारित विकास की एकदृष्टि सोच से जुड़ी हुई है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सशक्त कार्य समूह (EAG) राज्य कुपोषण से संबंधित समस्याओं का सामना सबसे ज्यादा करते हैं। कति दो EAG राज्यों, छत्तीसगढ़ और ओडिशा ने महाराष्ट्र तथा गुजरात (जनिकी प्रतिव्यक्ति आय लगभग दोगुनी है) के मुकाबले इस क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन किया है।

सशक्त कार्य समूह (EAG) राज्य

बिहार, छत्तीसगढ़, झारखंड, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान, उत्तरांचल और उत्तर प्रदेश को सशक्त कार्य समूह (EAG) राज्य कहा जाता है।

- गुजरात में प्रचलित विकास का रास्ता कुपोषण से लड़ने की जगह आर्थिक संवृद्धि तथा नविश की तरफ ज्यादा झुका हुआ है। वहीं दूसरी तरफ, ओडिशा कम आय वाला राज्य होने के बावजूद एकीकृत बाल विकास सेवाओं (ICDS), सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधा/प्रति लाख जनसंख्या कार्यबल और महिलाओं के बीच शिक्षा का बेहतर नेटवर्क स्थापित करने में सफल रहा है। इसकी बदौलत गुजरात के मुकाबले ओडिशा कुपोषण से प्रभावी ढंग से लड़ रहा है।
- इसके अलावा, हरियाणा, गुजरात और पंजाब जैसे तथाकथित विकसित राज्यों में जनजातीय, ग्रामीण, गरीब और अशिक्षित महिलाओं के बच्चे पोषण से कोसों दूर हैं। कम वजन तथा नाटे कद वाले दो-तर्हिई बच्चे विकासशील तथा विकसित दोनों ही राज्यों के 200 जिलों से हैं।

एकीकृत बाल विकास योजना (ICDS)

- यह योजना वर्ष 1975 में 6 साल से कम आयु के बच्चों के सर्वांगीण विकास (स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा) के लिये एक पहल के रूप में शुरू की गई थी।
- इसका उद्देश्य शिशु मृत्यु दर, बाल कुपोषण को कम करना और वदियालय में दाखलि से पूरव आवश्यक शिक्षा प्रदान करना है।
- ICDS योजना की नगिरानी संबंधी समग्र ज़मिमेदारी महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (MWCD) की है।

कृषि बनाम भूख

- दूसरा प्रमुख विचार यह है कि कृषि और पोषण को एक-दूसरे से संबद्ध किया जाए क्योंकि पोषण से संबंधित तमाम समस्याओं का समाधान कृषि ही प्रस्तुत करती है। हालाँकि आकलनों के अनुसार, कृषि अधिष्ठित राज्यों जैसे- हरियाणा में भी कुपोषण की भयावह समस्या (34% बौने कद और 29.5% कम वजन वाले बच्चों) बनी हुई है।
- चिंता की बात यह है कि हरियाणा के कुछ जिलों जो कि कृषि में संपन्न और विकसित हैं, में कुपोषण की समस्या ओडिशा के औसत से भी ज्यादा है।
- हाल ही में मध्य प्रदेश ने गेहूँ का उत्पादन काफी ज्यादा मात्रा में दर्ज किया है कति फरि भी तीव्र कुपोषण की समस्या (41.9% बौने कद और 42.8% कम वजन वाले बच्चों) इसके ज्यादातर जिलों में अब भी बनी हुई है।
- प्रचुर कृषि उत्पादन तथा कुपोषण के अंतरवैरोध को समझने के लिये विविध खाद्य पदार्थों का उदहारण लेते हैं। खाद्य सेवन में विविधता (खाद्य सेवन सूचकांक में दर्ज 19 खाद्य पदार्थों के आधार पर) आने के साथ ही कुपोषण (बौना कद/कम वजन) में गिरावट आने लगती है।
- यदि खाद्य पदार्थों में विविधता को शामिल किया जाए तो महज 12 प्रतिशत बच्चों कुपोषण से पीड़ित होंगे, जबकि 3 से कम प्रकार के खाद्य पदार्थों का सेवन करने वाले बच्चों में कुपोषण की समस्या 50 प्रतिशत तक पहुँच सकती है।

कुपोषण क्या है?

- कुपोषण (Malnutrition) वह अवस्था है जिसमें पौष्टिक पदार्थ और भोजन अव्यवस्थित रूप से लेने के कारण शरीर को पूरा पोषण नहीं मिला पाता है। कुपोषण तब भी होता है जब किसी व्यक्तिके आहार में पोषक तत्वों की सही मात्रा नहीं होती है।
- दरअसल, हम स्वस्थ रहने के लिये भोजन के जरिये ऊर्जा और पोषक तत्व प्राप्त करते हैं, लेकिन यदि भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिजों सहित पर्याप्त पोषक तत्व नहीं मिलते हैं तो हम कुपोषण के शिकार हो सकते हैं।

कुपोषण का प्रभाव

- शरीर को लंबे समय तक आवश्यक संतुलित आहार नहीं मिलने से बच्चों और महिलाओं में कुपोषण के चलते रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिससे वे आसानी से कई तरह की बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। बच्चों और स्त्रियों के अधिकांश रोगों की जड़ में कुपोषण ही है।

आगे की राह

इसमें कोई संदेह नहीं है कि भोजन में पोषक तत्वों की कमी कुपोषण का प्रमुख कारण है जो अप्रत्यक्ष रूप से इस मामले की अनदेखी तथा आर्थिक संवृद्धि पर आधारित में विकास की एकदृष्टि सोच से जुड़ती है। यह सोच भारत जैसे देश के लिये खतरनाक साबित हो सकती है। बच्चों में कुपोषण की इस समस्या का समाधान करना अति आवश्यक है। इसके लिये एक खाद्य और पोषण आयोग की स्थापना, संपूर्ण देश में पोषण के स्तर को बढ़ाए जाने की जरूरत जैसी बातों पर भी ध्यान देना चाहिये।

समय आ गया है कि सरकार इस मुद्दे के मूल कारण की पहचान कर कुपोषण से निपटने के लिये एक स्थायी समाधान की खोज करे। यह तभी संभव है जब राज्य हाशिये पर जीवन जी रहे लोगों के लिये रोजगार के अवसर पैदा करके समावेशी विकास पर ध्यान केंद्रित करेगा जो उनकी क्रय शक्ति में सुधार के साथ-साथ कुपोषण को कम करने में मददगार साबित होगा। कुपोषण से निपटने के लिये खाद्य पदार्थों की कीमतों को वनियमित किया जाना चाहिये और इसके लिये विकसित तथा गरीब दोनों राज्यों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली को सशक्त करना होगा।